

सितम्बर-अक्टूबर 2022

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र



सांग्ना

बाल पत्रिका



इस बार

खेल खिलाड़ी

5 गरिचा

उड़ान

10 दो गुब्बारे

11 घोड़ा मेरा

12 एक था बंदर

13 जंगल का राजा

14 मगरमच्छ और तालाब

ज्ञान विज्ञान

15 हृदय

जोड़-तोड़

16 X का मान

कलाकारी

17 टपरी की लिपाई

बात लै चीत ले

19 ग्वाला

20 पीपल का पेड़

21 माथापच्ची/हीहीही-ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ



दीपक प्रजापत, कक्षा-4 फेलोशिप सेटर बावड़ी

सम्पादन : राजेश कुमावत

सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक

डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज

प्रूफ़ : सुरेश चंद

वितरण : लोकेश राठौर

आवरण चित्र : नरेन्द्र गुर्जर, कक्षा-6, उच्च माध्यमिक विद्यालय पालीघाट

वर्ष 14 अंक 147-148

प्रबंधन

विष्णु गोपाल

निदेशक,

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता

मोरंगे

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर

(राजस्थान) 322001

फोन: 07462-220957

मोरंगे का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन-आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस-नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।



सुमन मीना, फेलोशिप सेटर हीरामन की ढाणी

‘ग्रामीण शिक्षा केन्द्र’ राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर-सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण ‘राजस्थान सोसाइटी अधिनियम-1958’ के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव-जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला की सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित हैं। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन-सहन, खान-पान, आजीविका, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोली-भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल

भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खौखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम - 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष-2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।



रोहित मीना, कक्षा-5 खाण्डोज

खेल खिलाड़ी

गरिंचा



फुटबॉल का सुपरस्टार जिसने पेले की चमक फीकी कर दी थी। फुटबॉल की दुनिया को जानने वाले जानते हैं कि खूबसूरत फुटबॉल का मतलब ड्रिब्लिंग है। ड्रिब्लिंग का मतलब पैर का गेंद से ऐसा तालमेल कि सामने वाला खिलाड़ी भौंचक्का रह जाए और देखते-देखते दूसरा खिलाड़ी गोलपोस्ट तक पहुँच जाये। इसे फुटबॉल के खेल की सबसे मुश्किल विधा माना जाता है। आधुनिक फुटबॉल में इसलिए मेसी का जादू साल दर साल बना हुआ है। मेसी के अलावा ब्राजील के सुपरस्टार रहे रोनाल्डो हो या फिर फ्रांस के लीजेंड जिनेदिन जिदान। दुनिया इनके खेल की आज भी दीवानी है।

कुछ उम्रदराज फुटबॉल प्रशंसक अगर टकरा जाएं तो वे आपको बतायेंगे कि मैराडोना जैसा ड्रिब्लर सदियों में एक बार आता है। उनसे पहले के दौर के लोग इंग्लिश फुटबॉलर जॉर्ज बेस्ट और डच फुटबॉलर जोहान क्रूफ की ड्रिब्लिंग को याद करते दिखेंगे।

अब बात उस फुटबॉलर की जो ड्रिब्लिंग की दुनिया का बेताज बादशाह था। ऐसा फुटबॉलर जो फुटबॉल के जादूगर माने जाने वाले लेपे के सामने सुपर स्टार था।

ब्राजीली फुटबॉल को शिखर पर पहुँचाने वाले उस खिलाड़ी का जलवा ऐसा था कि पेले की टीम में मौजूदगी के सामने अखबारों की हेडलाइन हुआ करती थी, 'अगले गुरुवार को फिर दिखेगा गरिंचा का जलवा।'

फुटबॉल की दुनिया में लम्बे समय तक उन्हें पेले की तुलना में भी महान खिलाड़ी माना जाता रहा है। इस फुटबॉलर का नाम था गरिंचा।

इस नाम को रखे जाने की कहानी भी कम दिलचस्प नहीं है। गरिंचा हम उम्र बच्चों की तुलना में बहुत छोटे और कमजोर थे और उनकी बहनों ने उसका नाम स्थानीय छोटा पक्षी गरिंचा के नाम पर गरिंचा रख दिया था।

गरिंचा और पेले की तुलना तो तब भी होती थी और आज भी होती है। लेकिन उस पर बात करने

से पहले कहानी गरिंचा की जिसके बारे में डॉक्टरों की राय यह थी कि वह ठीक ठाक एथलीट भी नहीं हो सकते।

‘सबसे बेहतरीन ड्रिब्लर’

28 अक्टूबर, 1933 को ब्राजील के रियो डि जेनेरियो की झुग्गी झोपड़ी वाली बस्ती में जन्मे गरिंचा के पैरों में समस्या थी। उनका दायां पैर बायें पैर की तुलना में छः सेंटीमीटर छोटा था और उनका बायां पैर अंदर की ओर मुड़ा हुआ भी था।

एक तरह से वे सीधे खड़े नहीं हो सकते थे, लेकिन गरिंचा ने ड्रिब्लिंग में अपनी इस खामी को ही खासियत में तब्दील कर लिया। वे जब बेइंग अंदाज में विपक्षी टीम के डिफेंडरों को छकाते थे तो स्टेडियम की जनता का हंसते-हंसते बुरा हाल हो जाता था।

इसी वजह से गरिंचा के फुटबॉल को लोग पीपल्स जॉय के नाम से जानते हैं। उन्हें फुटबॉल का चार्ली चैंपलिन जैसा दर्जा हासिल था। गरिंचा यहाँ तक बेहद गरीबी में पहुँचे थे।

शराबी पिता से गरिंचा को केवल शराब की तल ही मिली थी और 14 साल की उम्र से पेट पालने के लिए वे एक टेक्टाइल मिल में मजदूरी करने लगे थे। उन्हें एक आलसी कर्मचारी तौर पर देखा जाता था लेकिन वे मील की फुटबॉल टीम के स्टार थे। इसी वजह से नौकरी नहीं छिनी थी।

गरिंचा को किसी फुटबॉल क्लब में खेलने का मौका नहीं मिला था। ब्राजील के बेहतरीन फुटबॉलर निल्टन सैंटोस की नजर जब 19 साल के गरिंचा पर पड़ी तो वे उसे बोटोफोगो क्लब में ले आये थे।

जिस उम्र में पेले को नेशनल टीम में खेलने का मौका मिल गया था, उससे भी अधिक उम्र में गरिंचा पर पहली बार किसी दिग्गज की नजर पड़ी थी। 1963 में गरिंचा को बोटोफोगो क्लब से पहली बार खेलने का मौका मिला और पहले ही मैच में उन्होंने हैट्रिक जमा दी। सैंटोस के भरोसे को उन्होंने सही साबित कर दिखाया।

लेकिन उन्हें 1954 के वर्ल्ड कप के लिए नेशनल टीम में जगह नहीं मिली। गरिंचा क्लब के लिए लगातार बढ़िया प्रदर्शन करते रहे। 1957 में उन्होंने क्लब के लिए 20 गोल करके नेशनल सेलेक्शन के लिए दरवाजा खटखटाया और राइट विंगर के तौर पर वे टीम में शामिल किये गये।

पेले ने भी अपने संस्मरण ‘व्हाइट सॉक्स मैटर्स’ में गरिंचा को लेकर कई पहलुओं पर लिखा है। दरअसल, पेले और गरिंचा, दोनों का करिश्मा पहली बार दुनिया के फुटबॉल प्रेमियों को 1958 वर्ल्ड कप के दौरान दिखा।

गरिंचा की शारीरिक क्षमता को लेकर टीम प्रबंधन को शक तो था ही, लेकिन मेंटल टेस्ट में भी गरिंचा पास नहीं कर पाए थे। पेले ने अपनी पुस्तक में लिखा है, “गरिंचा ने अपने प्रोफेशन का स्पेलिंग भी गलत लिखा था, अगर स्पेलिंग सही लिखना एक क्राइटेरिया होता तो टीम का कोई खिलाड़ी वर्ल्ड कप में हिस्सा नहीं ले पाता।”

वैसे गरिंचा के अलावा टीम का दूसरा खिलाड़ी जो मेंटल टेस्ट पास नहीं कर पाया था, वे पेले थे। डॉक्टरों के मुताबिक कम उम्र के चलते वे वर्ल्ड कप जैसे मुकाबले का दबाव नहीं झेल सकते थे। बाद

में पेले और गरिंचा की बदौलत ही ब्राजील पहली बार वर्ल्ड चैम्पियन बनने में कामयाब हुआ था।

टीम के कोच ने मनोचिकित्सकों और डॉक्टरों की राय से उलट इन दोनों खिलाड़ियों को टीम में शामिल करने का फैसला लिया।

पेले ने 1958 वर्ल्ड कप फाइनल मुकाबले को याद करते हुए लिखा है, “स्वीडन के खिलाफ आखिरी पलों में मैंने हेडर से पांचवा गोल किया था। उस हेडर को लगाने के बाद आंखों के सामने अंधेरा छा गया था और गोल पोस्ट के सामने मैं लेट गया था, बिना हिले-डुले।”



“गरिंचा मेरे पास सबसे पहले भागकर आये थे। वे प्यारी आत्मा वाले खिलाड़ी थे, वे मेरी मदद करने के लिए भागे थे। उन्होंने मेरे पांव को उठाया, वे किसी तरह मेरे सिर में रक्त के प्रवाह को फिर से शुरू करना चाहते थे। थोड़ी देर में मुझे होश आया तो देखा टीम के बाकी खिलाड़ी जश्न मना रहे थे।”

इस वर्ल्ड कप में वेल्स की टीम में शामिल डिफेंडर मेल हॉपकिंस ने मुकाबले के बाद कहा था, “गरिंचा पेले की तुलना में कहीं ज्यादा खतरनाक थे, उनको खेलते देखना जादू देखने जैसा था।”

इन दोनों खिलाड़ियों के आपसी तालमेल में ऐसा जादू था कि दोनों जिस भी मुकाबले में एक साथ खेले ब्राजील वो मुकाबला नहीं हारा। दोनों खिलाड़ियों ने एक साथ 40 मैच खेले। जिसमें ब्राजील 36 मैच जीतने में कामयाब रहा और चार मैच ड्रा रहे। टीम ने कोई मुकाबला नहीं गंवाया।

कहते हैं कि एक जीनियस ही दूसरे जीनियस का सम्मान करना जानता है। अगर इस कसौटी पर

आंके तो फुटबॉल के जादूगर पेले ने एक अगस्त 2018 को अपने फेसबुक अकाउंट से लिखा था, 'मैं अपने जीवन में गरिंचा से बेहतर खिलाड़ी के साथ या खिलाफ नहीं खेला। जब हम मैदान में होते थे टीम मैट्स थे। पिच के बाहर हम भाई थे।'

दरअसल सच्चाई यही थी कि 1958 के बाद ब्राजील में गरिंचा और पेले का जलवा किसी सुपरस्टार से कम नहीं था। एक बेहतर माहौल आपको क्या कुछ दे सकता है और क्या कुछ छीन सकता है, इसकी मिसाल पेले और गरिंचा की कहानी भी है।

रॉय कैस्ट्रो ने गरिंचा पर लिखी किताब में बताया है कि 1958 के बाद पेले ने एक अनुभवी मैनेजर रखा और मैनेजर ने पेले के क्लब सैंटोस के साथ 500 डॉलर प्रति महीने का करार किया था। ऐसा करार जिसमें अनुबंध की रकम हर साल बढ़नी थी।

जबकि दूसरी बोटोफोगो क्लब के मैनेजर ने गरिंचा के सामने अनुबंध के पेपर पर रकम की जगह खाली छोड़ दी थी, लेकिन गरिंचा के पास कोई ऐसा मैनेजर नहीं था जो उन्हें संभालता। लिहाजा गरिंचा ने खाली जगह पर ही साइन कर दिया और अगले तीन साल तक क्लब ने उन्हें 300 डॉलर प्रति महीने की दर से भुगतान किया।

ये एक उदाहरण बताता है कि जब स्टारडम की और बढ़ने लगते हैं तो आपके आस-पास के लोगों की भूमिका कितनी अहम हो जाती है। दूसरा उदाहरण है कि पेले जहाँ अपने क्लब के करियर को लेकर गंभीर होते गए वहीं गरिंचा अपने आस-पास के लोगों की दुनिया में खोते चले गये।

गरीबी और अभाव में पले-बड़े गरिंचा के कदम यहां से लड़खड़ाते चले गये। उन्होंने खुद को शराब के नशे में डूबो लिया। उनका वजन बढ़ता गया।

लेकिन फुटबॉल की दुनिया को अभी भी गरिंचा का वो दौर देखना था जिसे इतिहास में दर्ज होना था। चार साल बीतने में वक्त नहीं लगा और 1962 का वर्ल्ड कप सामने आ गया। चिली में होने वाले इस वर्ल्ड कप के लिए किसी तरह गरिंचा इस टीम में जगह पाने में कामयाब हुए थे।

टूर्नामेंट के दूसरे मैच में पेले चोटिल होकर टूर्नामेंट से बाहर हो गये थे। तब टीम की जिम्मेदारी गरिंचा पर आ गई थी। उस वक्त चिली फुटबॉल कोच एसोसिएशन के चेयरमैन बलबर्टो कासोरला ने कहा था, "ब्राजील की दो टीम हैं- एक टीम जिसमें पेले है और दूसरी टीम जो पेले के बिना है। दूसरी टीम वर्ल्ड कप जीतने में सक्षम नहीं है।"

कासोरला को अंदाजा भी नहीं रहा होगा कि उन्हें अपने शब्द वापस निगलने पड़ेंगे, यह संभव कर दिखाया था गरिंचा ने।

गरिंचा ने इंग्लैंड और चिली के खिलाफ दो अहम मैचों में चार गोल दागे। चिली के खिलाफ सेमी-फाइनल मुकाबले में ब्राजील 4-2 से जीतने में कामयाब रहा था।

इस मैच में गरिंचा ने दो गोल जरूर दागे और तीसरा गोल बनाने में मदद की थी। गरिंचा के दोनों गोल आज भी बेमिसाल माने जाते हैं। पहला गोल उन्होंने बला कि तेजी से बायें पैर से 20 गज की दूरी से झन्नाटेदार शाट्स से किया था तो दूसरा गोल एक अद्भुत हेडर था।

चिली के खिलाड़ियों ने उन्हें लगातार मार्क करने की कोशिश की थी जिसके चलते उनका

व्यवहार भी आक्रमक हुआ तो 83वें मिनट में रेफरी ने उन्हें लाल कार्ड दिखाया, जिसके बाद वे फाइनल मुकाबले से भी बाहर हो गये थे।

रेफरी के इस फैसले पर हंगामा मच गया था। ब्राजील ने भी फीफा के डिस्प्लिनरी कमेटी में इस फैसले पर आपत्ति जताई। रॉय कैस्ट्रो किताब में इस बात का जिक्र है कि ब्राजील के प्रधानमंत्री ने रणनीति तौर पर भी इसे मुद्दा बनाया। इसके बाद रेफरी ने ये कहा कि गरिंचा के फाउल को उन्होंने अपनी आंखों से नहीं देखा था और लाइनमैन की बात पर उन्होंने फैसला सुनाया।

अलग-अलग लैटिन अमेरिकी देशों के प्रीमियर ने भी फीफा के अधिकारियों से बात की और लाइनमैन को रातों-रात हटा दिया गया और गरिंचा को फाइनल खेलने का मौका मिला।



कम ही लोगों को मालूम होगा कि गरिंचा चेकोस्लोवाकिया के खिलाफ फाइनल मुकाबले में 102 डिग्री बुखार के बाद खेलने के लिए उतरे। लेकिन उनकी मौजूदगी का ऐसा असर रहा कि टीम लगातार दूसरी बार वर्ल्ड कप जीतने में कामयाब रही।

एक तरह से गरिंचा ने अपने दम पर ब्राजील को ये वर्ल्ड कप जिताया था। ऐसा करिश्मा फुटबॉल फैंस को 1986 में जाकर दोबारा देखने को मिला जब मैराडोना ने अर्जेंटीना को वर्ल्ड कप में जीत दिलाई थी।

गरिंचा के खेल पर उरुग्वे के मशहूर खेल पत्रकार इडुआर्डो गैलिनो ने लिखा है, “जब गरिंचा अपने फॉर्म में होते थे तो फुटबॉल का मैदान सर्कस बन जाता था। फुटबॉल पालतू जानवर और खेल पार्टी की शुरुआत। गरिंचा जानवर और खेल के माध्यम से ऐसा जादू रचते कि दर्शक केवल देखते रह जाते थे।”

गरिंचा जीवन भर ब्राजीली जीवनशैली के प्रतीक रहे। फुटबॉल, सांबा और संगीत। इससे अधिक उन्होंने कुछ और चाहा भी नहीं। गरिंचा ने कभी बिजनेस कारणों से हवाई यात्रा नहीं की और ना ही उन्होंने अपने जीवन में टाई-सूट पहना। ना ही वे राजनेताओं से मिलते थे और ना ही कॉरपोरेट घरानों के मालिकों से।

जीवन के आखिरी सालों में पैसों की तंगी भी हुई और जनवरी, 1983 में महज 49 साल की उम्र में लिवर सिरोसिस की बीमारी से उनकी मौत हुई।

जब उनका पार्थिव शरीर उनके गाँव पाउ ग्रेनेड के लिए चला तो ब्राजील की जनता सड़कों पर उतर आई।

इतनी भीड़ देखकर पादरी ने अंतिम प्रार्थना भी मिनटों में निपटाई। इतनी भीड़ थी कि गरिंचा के नाते रिश्तेदार भी उनकी अंतिम झलक नहीं देख सके। गरिंचा जैसा फुटबॉल खेलते रहे, वैसे ही उनकी विदाई हुई थी।

स्रोत - विष्णु गोपाल

दो गुब्बारे

दो गुब्बारे दो गुब्बारे
लाल रंग के गुलाबी रंग के
रंग बिरंगे दो गुब्बारे
साथ चले उड़ते चले
मस्ती में लहराते
ऊपर जाते नीचे आते
इतराते और खिलखिलाते
बच्चों का मन बहलाते
हाथ ना आते फुर उड़ जाते
उनको दुःख हुआ रे
जब उनके कांटा चुभा रे
दो गुब्बारे दो गुब्बारे।

गोविन्द नायक, कक्षा-7,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार



घोड़ा मेरा

घोड़ा मेरा लाल सफेद
चलने में है सबसे तेज
चने खाता है वो भरपेट
दौड़े जब वह तौड़े गेट
करते हैं हम इसकी सवारी
बैठें इस पर बारी बारी
दिन भर सबको सैर कराता
सांझ ढले वो घर को आता

जहाँ ले जाते वहाँ वो जाता
अपनी ये लगाम खींचाता
बैठने वाला मजा उड़ाता
घोड़े को भी नाच नचाया
बैठे-बैठे वो थक जाता
उतर के जब घर को आता
घर आकर वो बात बताता
घोड़े पर वो मजे उड़ाता।

मीनाक्षी बैरवा

कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार



रवीना शर्मा, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार



मनीष गुर्जर, कक्षा-4,
उच्च प्राथमिक विद्यालय फरिया

एक था बंदर

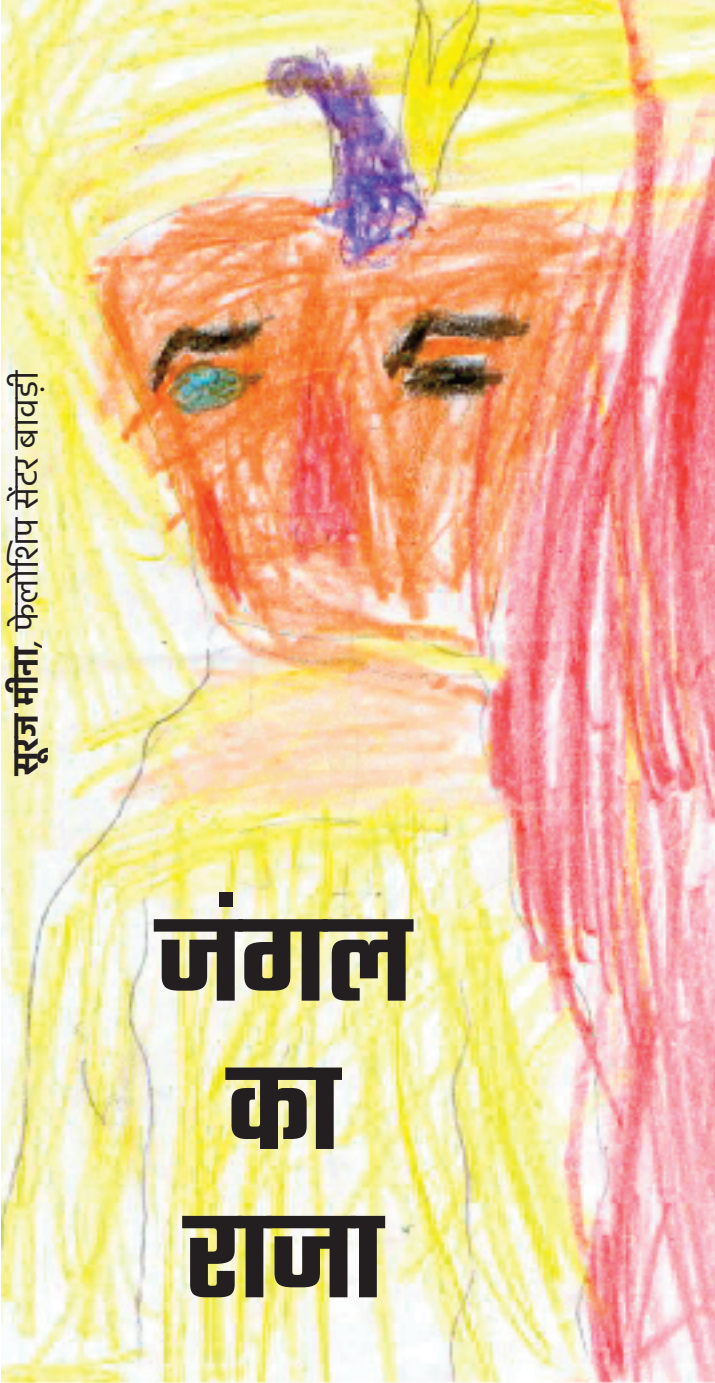
एक था बंदर
खाता था चुकंदर
रहता वह बरगद के ऊपर
जाता जब बगिया के अंदर
खाता वह ककड़ी और मूली
उछल कूद मचाता
गाजर चट कर जाता
माली बगिया में जब आता
गुस्से से वह भर जाता
एक दिन लाया वह काला बंदर
दोनों में हुई लड़ाई
भाग गया बंदर भाई।

आरती गुर्जर कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



शीतल बैरवा, कक्षा-4,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

सूरज मीना, फेलोशिप सेंटर बावड़ी



जंगल का राजा

एक बार एक जंगल में कई सारे जानवर स्वतंत्र रूप से हिल मिलकर रहते थे। शेर, लोमड़ी, बंदर, खरगोश, चिड़िया, तोता, हाथी, हिरण, चीता, मोर, भालू आदि। वे सारे बहुत अच्छे दोस्त थे। एक दिन रात का समय था। सभी जानवर एक जगह पर एकत्रित हुए। सभी अलग-अलग भोजन अपने साथ लेकर आए। सभी बरगद के पेड़ के नीचे आराम से बैठकर भोजन करने लगे। तभी लोमड़ी की नजर शेर पर पड़ी। शेर उदास सा एक कोने में चुपचाप दुबककर बैठा था। लोमड़ी ने कहा अरे आप उदास क्यों हो? शेर बोला कि मेरे पास आज भोजन नहीं है। लोमड़ी बोली हमारे पास जो भोजन है उसमें से थोड़ा-थोड़ा आप ले लो। यह सुनकर शेर खुश हुआ और उसने थोड़ा सा भोजन ले लिया। सभी जानवर भोजन करने के बाद आपस में तय करते हैं कि आज अपने राजा का चुनाव करेंगे। इसके लिए हम एक प्रतियोगिता करते हैं। बंदर बोला, हाँ प्रतियोगिता में जीतने वाले को जंगल का राजा बनायेंगे। इस पर सभी जानवर सहमत हो गये। फिर क्या

था। प्रतियोगिता शुरू हुई। सभी एक लाइन में खड़े हो गये और सभी को एक-एक चम्मच दी गई और साथ ही एक-एक अंटी (कंचा) दिया गया। सभी को चम्मच में अंटी रखकर मुँह से दबाकर अंटी को बिना गिराए गाँव तक जाकर वापस आना था। सभी अपने-अपने चम्मच में अंटी रख कर चले गये। सभी की वापस आते-आते अंटी गिर गई किन्तु शेर की अंटी नहीं गिरी। फिर क्या था सभी जानवरों ने जंगल का राजा शेर को बना दिया।

रवीना शर्मा, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मगरमच्छ और तालाब

प्रतिज्ञा ढोली कक्षा-5 फेलोशिप सेंटर रांवल



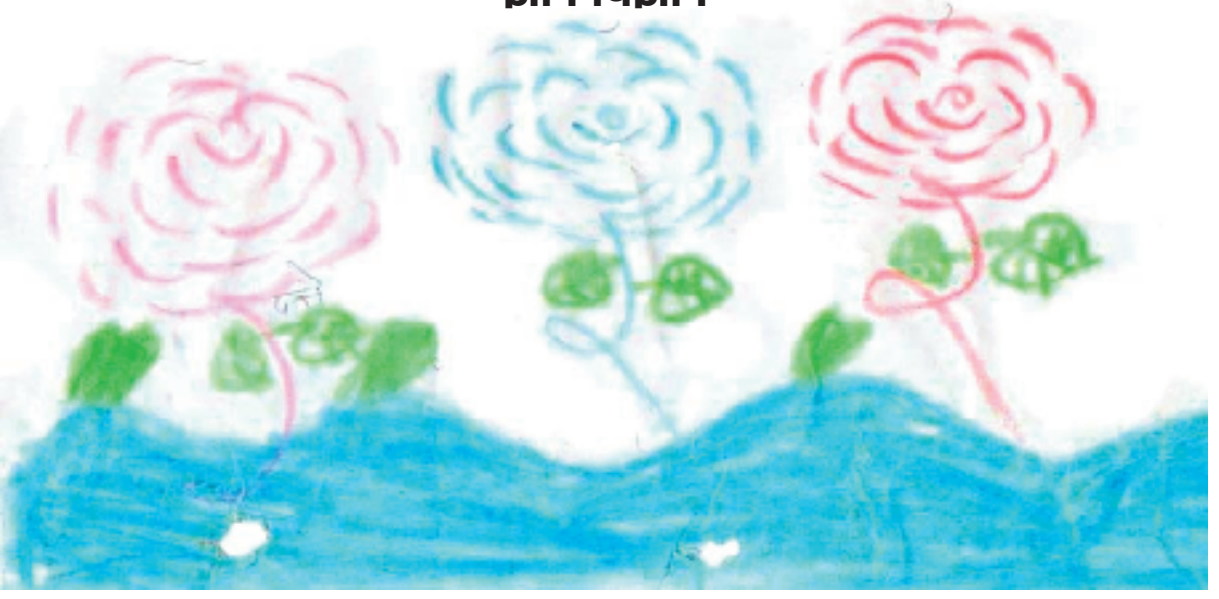
जंगल में एक तालाब था। तालाब का पानी बहुत साफ और स्वच्छ था। सभी जानवर तालाब का पानी पीने आते थे। एक दिन कहीं से एक मगरमच्छ तालाब में आ गया। जब भी छोटे-मोटे जानवर तालाब पर पानी पीने आते तो मगरमच्छ उनका शिकार कर लेता था। उसने सभी जावरों को चेतावनी देकर बोला कि अब से मैं ही इस तालाब का राजा हूँ। उसने जंगल के जानवरों को पानी पीने से मना कर दिया। अब जंगल के सभी जानवर चिंतित हो गये। उन्होंने एक सभा बुलाई और उसमें सभी जानवरों ने भाग लिया। सभी जानवर मिलकर मगरमच्छ को नदी से भगाने की योजना बनाने लगे लेकिन उन्हें कोई उपाय नहीं सूझा। तभी पप्पू हाथी बोला कि यदि सारे हाथी मिलकर अपनी सूंड से भरकर उस तालाब को खाली कर दे तो वह तालाब सूख जाएगा और मगरमच्छ

वहाँ से भाग जाएगा। तभी छोटू खरगोश बोला, यह तो ठीक है लेकिन उस पानी को हम कहाँ डालेंगे। तभी जंगल का राजा शेर कहता है कि हम सब मिलकर एक दूसरा गड्ढा तैयार करते हैं और तालाब का सारा पानी उसमें भर देंगे। जंगल के सारे जानवर तैयार हो गये। सभी जानवर मिलकर गड्ढा तैयार करने में लग गये और सारे हाथी सूंड भर-भर कर पानी लाने लगे। धीरे-धीरे उस तालाब का सारा पानी खत्म हो गया और उनके लिए एक नया तालाब भी बन गया। यह सब देखकर सभी जानवर बहुत खुश हुए और मगरमच्छ परेशान होकर वहाँ से दूसरी जगह चला गया।

निधि, रिया, रामकेश, लक्ष्मी, समूह-स्वीट होम, कक्षा-2,

उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

ज्ञान विज्ञान



चंदा, नवरंग शिक्षण केन्द्र, बावरी बस्ती

हृदय

हमारे तरुण गुरुजी कक्षा 7वीं के बच्चों को विज्ञान विषय में हृदय के बारे में पढ़ा रहे थे। उन्होंने सभी बच्चों से पूछा कि तुम्हारा हृदय शरीर में कहाँ पर होता है? अंकित ने बताया कि दायें हाथ के कंधे के पास हृदय होता है। कई बच्चों ने तो पेट में बताया, कई बच्चों ने पसलियों के बगल में बताया। फिर हमारे गुरुजी ने कहा कि आज मैं तुम्हें बताऊंगा कि हमारे शरीर में हृदय कहाँ होता है? गुरुजी ने कहा कि तुम्हारे शरीर में छाती पर धड़क-धड़क कहाँ पर हो रहा है, एक दूसरे की छाती से कान लगाकर महसूस करो। मैंने कहा गुरुजी दायें हाथ के छाती के नीचे हृदय है। गुरुजी ने कहा कि मैं एक मिनट तक गिनता हूँ तुम देखो कि तुम्हारा हृदय एक मिनट में कितनी बार धड़कता है। कई बच्चों ने 92 बार बताया तो कई बच्चों ने 72 बार बताया। उसके बाद सर ने हमसे कहा कि तुम सब मैदान में जाओ और तेज दौड़ लगाकर वापस समूह में आ जाना। हम सब दौड़त-दौड़ते जल्दी से समूह में आ गये। गुरुजी ने कहा कि अब चेक करो एक मिनट में तुम्हारा हृदय कितनी बार धड़क रहा है। इस बार सबका हृदय लगभग 120 बार के आस-पास धड़क रहा था। गुरुजी ने बताया कि सामान्य अवस्था में हृदय 72 बार तथा दौड़ लगाने या परिश्रम करने के समय यह तेजी से धड़कता है। हमारा हृदय हमारी छाती में पसलियों के बीच सुरक्षित रहता है ताकि इसे कोई चोट नहीं लगे। आज हमें हृदय के धड़कने के बारे में जानकारी हुई।

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा-8, समूह-हरियाली

X का मान

पहले मैं सोचती थी कि किसी भी संख्या का मान X होता है। एक दिन जब मैं गणित का सवाल हल कर रही थी तो उसमें सवाल आया कि X का मान बताओ। मैंने सोचा कि मैं सर

से पूछूंगी कि X का मान क्या होता है। फिर मैं

सवाल को अपनी कॉपी में लिखकर

सर के पास ले गई तो सर ने बताया

कि कोई जरूरी नहीं है कि ग् का

ही मान लिखो। इसकी जगह

तुम a,b,c,y,z,k,h, या कोई भी

अक्षर ले लो। ये अक्षर चर होते हैं।



चर के मान विभिन्न हो सकते

हैं। इनके मान निश्चित नहीं

होते हैं। इसके दूसरी और

अक्षर का एक

निश्चित मान होता है।

अक्षर के उदाहरण- 4,

6, 1000 .. है।

जब हम चर और

अक्षर को समायोजित करते हैं तो बीजीय व्यंजकों को बनाते हैं।

इसके लिए हमें योग, व्यवकलन, गुणन और विभाजन की

संक्रियाओं का प्रयोग करते हैं। उदाहरण $4X+5$, 'X' चर के

प्रयोग से बना है, जिसमें पले चर X को अक्षर 4 से गुना

करके और फिर इस गुणनफल में अक्षर 5 में जोड़ के प्राप्त

किया गया है।

फिर से सर ने एक सवाल दिया। मुझसे उसका उत्तर नहीं आया तो फिर मैं सर के पास गई और

उस सवाल को हल करवाया। सर ने उस सवाल को एक मिनट में हल कर दिया पर मुझसे फिर भी

सवाल हल नहीं हुआ और मैंने सर से फिर एक सवाल लिया और उसको हल किया। मैं रोज एक

सवाल सर से लिखवाकर उसे हल करने का प्रयास करती। फिर मैंने सवाल लिखवाना बंद कर दिया

क्योंकि मुझे X का मान पता चल गया था। अब मैं X का मान निकाल सकती हूँ।

प्रिया गुर्जर, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

कलाकारी

टपरी की लिपाई

कल की बात है। कल सुबह जब हम पढ़ने आये तो सबने मिलकर टपरी को लीपने की योजना बनाई। पहले हमने टपरी की साफ-सफाई की। झाड़ू निकाला, टपरी के आस-पास के झाड़ू काटे आदि कार्य किया। उसके बाद में हमने तरुण गुरुजी से कहा कि यहाँ पर मिट्टी कहाँ है? फिर तरुण गुरुजी बोले कि मुझे मिट्टी का पता नहीं है। चेतना बोली कि गुरुजी हमारे रास्ते में एक खाड़ आता है। वहाँ पर एक ऊँची सी टीली है। वहाँ पीली और बहुत अच्छी मिट्टी है। तरुण गुरुजी ने कहा कि चेतना वहीं



सोनिया मीना, कक्षा-2, फेलोशिप सेंटर खाण्डोज

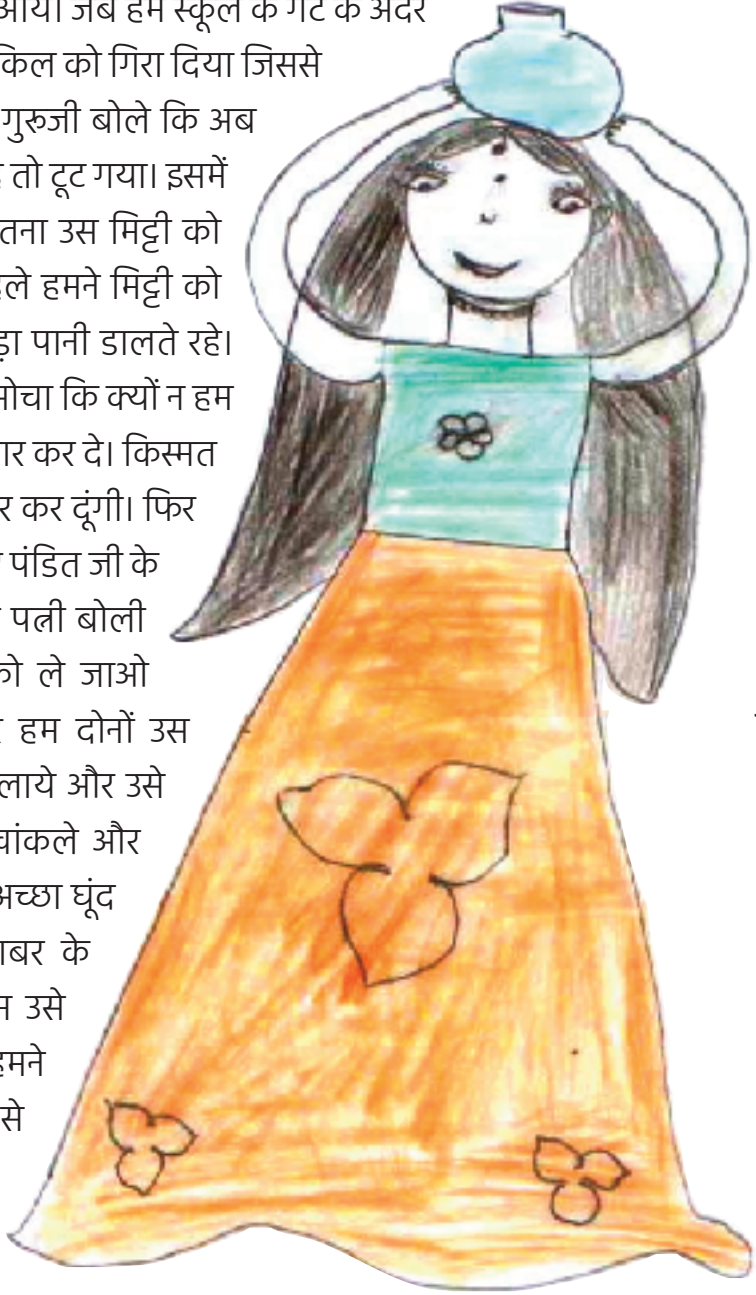
पर चलते हैं तो अब सब बच्चे और तरुण गुरुजी चेतना के साथ-साथ मिट्टी लेने चले गये। नीरज भी अपनी साईकिल लेकर हमारे पीछे-पीछे आ रहा था। फिर हमने नीरज से कहा कि तुम स्कूल में से एक बड़ा बाल्टा लेकर आओ। फिर नीरज स्कूल में से एक बाल्टा लेकर आ गया। हम उस टीली के पास गये और वहाँ से हमने फावड़े की सहायता से मिट्टी खोदी। सबसे पहले नीरज ने मिट्टी खोदी फिर सभी बच्चों का बारी-बारी से नम्बर आया। फिर हमने मिट्टी को बाल्टे में भरकर नीरज की साईकिल पर रख दिया और नीरज उस बाल्टे को लेकर आया और हमारी टपरी में डाल दिया। फिर वहाँ पर मैंने

तरुण गुरुजी ने, चेतना, मीनाक्षी, ज्योति, किस्मत आदि ने फोटो भी खींचे। फिर तरुण गुरुजी बोले कि एक छोटी और बड़ा बाल्टी और लेकर आओ। नीरज अपनी साईकिल से आया और एक छोटी बाल्टी व बड़ा बाल्टा लेकर गया। फिर हम सबने मिलकर बची हुई मिट्टी को बाल्टी और बाल्टे में भर दिया। बड़े बाल्टे को हमने मिलकर रितेश की साईकिल पर रख दिया। रितेश की साईकिल में और चेतना, राजबाला पकड़े हुए लेकर आये। जब हम स्कूल के गेट के अंदर आये तो रितेश ने जानबूझकर साईकिल को गिरा दिया जिससे

वह बाल्टा फूट गया। फिर तरुण गुरुजी बोले कि अब तुम इस बाल्टे का क्या करोगी, यह तो टूट गया। इसमें अब मिट्टी नहीं रुकेगी। मैं और चेतना उस मिट्टी को वहीं पर छोड़ आये फिर सबसे पहले हमने मिट्टी को तैयार किया और उसमें थोड़ा-थोड़ा पानी डालते रहे। हाथों से मिट्टी गूंथने के बाद हमने सोचा कि क्यों न हम में से कोई एक जना इसे पैरों से तैयार कर दे। किस्मत बोली कि मैं इसे अपने पैरों से तैयार कर दूंगी। फिर मैं और वंदना खांकला लेने के लिए पंडित जी के खेत पर चले गये। पण्डित जी की पत्नी बोली कि तुम इस गले हुए खांकले को ले जाओ इससे बहुत अच्छा लिपेगा। फिर हम दोनों उस खांकले को एक बाल्टे में भर के लाये और उसे मिट्टी में मिला दिया। फिर उस खांकले और मिट्टी को मिलाकर उसको पैरों से अच्छा घूंद दिया और उस मिट्टी के छः बराबर के थालवे बना दिये ताकि अगर हम उसे लीपे तो बराबर ही लीप सके। हमने उस थालवों को एक लम्बे से धागे से मापा। फिर सबने मिलकर हमारी वाली टपरी को लीप दिया। लीपने के बाद वंदना ने बची हुई मिट्टी की

डोड़ी बना दी। इतने में ही रवीना और हरिओम की मम्मी भी आ गई वो उनके लिए टिफिन लेकर आई थी। उन्होंने हमारे द्वारा की गई लिपाई को देखा। उनको लिपाई बहुत अच्छी लगी। थोड़ी सी कमी रह गई थी जिसे उन्होंने ठीक कर दिया। इसके बाद हम सब अपनी कक्षा में चले गये।

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।



बात लै चीत ले

ज्योति, कक्षा-3, राजकीय अपर प्राइमरी स्कूल फरिया



एक ग्वाल था जो बकरी चराने जाता था। ग्वाले की पत्नी गाँव की औरतों से ऐसे बोलती थी कि मैं अपने पति के पाँव छूकर खाना खाती हूँ। एक दिन ग्वाला लकड़ी लेने गया। वह रास्ते के सहारे ही पेड़ की बड़ी डाली काट रहा था। एक ब्राहमण वहाँ आया और बोला कि भाई तू जिस डाल पर बैठा है उसको ही काट रहा है, ऐसे तो तू गिर जायेगा।

ग्वाले ने पेड़ से उतरकर ब्राहमण का कंठ पकड़ लिया और बोला बता ब्राहमण मैं कब मरूंगा। ब्राहमण ने मन ही मन सोचा, मुझे क्या पता तू कब मरेगा। ब्राहमण ने उससे बचने के लिए चालाकी की और कहा, यह धागा मैं तेरे हाथ में बांध रहा हूँ। यह टूटा तो तू मर जायेगा। ग्वाला

अपने घर

चला गया।

ग्वाला उस

धागे को संभाल

कर रखता। वह हाथ

धोता तब भी

ध्यान से धोता

था। एक दिन माताजी का मेला आया। सब घरों में लाडू-बाटी बन रहे थे। ग्वाला और उसकी पत्नी भी लाडू-बाटी बनाने लगे। जब वह लाडू-बाटी कूट रहा था तो उसका डोरा टूट गया। वह कमरे में जाकर सौ गया और कहने लगा। मरा रे-मरा रे इतना कहकर वह सो गया। उसकी पत्नी ने सोचा पहले मैं लाडू-बाटी खा लूँ बाद में रो लूंगी। पहले उसने ग्वाले के झट से पैर छुए और लाडू बाटी खा लिये फिर रोने लगी। उसकी आवाज सुनकर गाँव वाले इकट्ठे हो गये और उसको उठाकर जलाने के लिए चल दिये। वे रास्ते में पहुँचे थे इतने में ही एक आदमी आया और उसने रास्ते के बारे में पूछा तो ऊपर से मरा हुआ ग्वाला बोला, भाई रास्ता उधर से है। यह सुनकर गाँव वाले चौंक गये और उन्हें उस ग्वाले की चालाकी समझ में आ गई। सभी गाँव वाले ग्वाले को वहीं छोड़कर अपने घर आ गये।

विजय गुर्जर, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

पीपल का पेड़



दो तीन साल पहले की बात है। हमारे गाँव में नरेश के घर के सामने एक बहुत बड़ा पीपल का पेड़ था। सभी लोग उस पीपल के पेड़ से बहुत परेशान थे। क्योंकि वह पीपल का पेड़ बीच रास्ते में था। सब लोगों ने पंचायत बुलाई और कहा इस पेड़ को कटवा दो। पर नरेश के पापा ने कहा कि मैं इस पेड़ को नहीं काटने दूंगा क्योंकि ये पेड़ हमारे घर की शान है और हमारे पूर्वजों की पहचान है। बहुत पहले इसी पेड़ के नीचे पंचायत लगती थी। मैं इसे नहीं काटने दूंगा।

नरेश के पापा को सभी लोगों ने मनाया और वह पेड़ कटवा ही दिया। नरेश के पापा ने पेड़ को कटते हुए देखा तो उनकी आँखों में आंसू आ गये और वे जोर-जोर से रोने लगे। सभी लोगों ने नरेश के पापा से पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो? तो नरेश के पापा ने कहा कि मैं इस पेड़ को बचपन से देखता आया हूँ और मैंने इस पेड़ में रोजाना पानी डाला है। इसलिए आज इसे कटता देखकर मुझे रोना आ रहा है। सभी लोगों को नरेश के पापा पर दया आ गई और कहा कि तुम्हें रोने की कोई जरूरत नहीं है। हम सब कल ही एक नया

पीपल का पौधा लायेंगे और ऐसी जगह पर लगायेंगे जिससे किसी को कोई तकलीफ न हो। नरेश के पापा ने खुश होकर कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ पीपल का पौधा लेने चलूंगा। जब सुबह हुई तो नरेश के पापा ने सभी लोगों को बुलाया और वे पौधा लेने के लिए गये। सभी लोगों ने एक

पीपल का पौधा खरीदा और पौधा लेकर वापस अपने घर आ गये। उन लोगों ने मिलकर पीपल का पौधा लगा दिया फिर धीरे-धीरे वह बड़ा होने लगा। नरेश के पापा ने उस पेड़ में पानी डाला और वे रोज ही उस पीपल के पेड़ में पानी डालते। नरेश के पापा शनिवार को उसकी पूजा भी करते थे।

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

माथा पच्ची

1. ऐसी कौनसी चीज है जो खुद नहीं देख सकती लेकिन दूसरों को रास्ता दिखाती है?
2. ऐसी कौनसी चीज है जिसकी परछाई नहीं होती?
3. ऐसी कौनसी चीज है जो सर्दी हो या गर्मी हमेशा ठंडी ही रहती है?
4. वह कौन है जो आपके घर की रानी है, पर घर उसका नहीं है?
5. बच्चों का वह कौनसा खिलौना है जिसे दुनिया का सबसे अमीर आदमी भी नहीं खरीद सकता ?

विजय गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



नरेन्द्र गुर्जर कक्षा-6, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पालीघाट

हीहीही-ठीठीठी

पप्पू - पापा एक डीजे मंगवा दो।
पप्पू के पापा - नहीं, तुम रात में सबको परेशान करोगे।
पप्पू - नहीं पापा, रात में सब सो जायेंगे तब बजाऊंगा।

अभिषेक गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

घर में थी मकड़ी
मोटी और तगड़ी ...

इशु कुमावत

कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार के द्वारा शुरु की गई कविता को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।



लोकेश गुर्जर, कक्षा-7, उच्च माध्यमिक विद्यालय पालीघाट



एक बार की बात है। एक गाँव था उस गाँव में एक आदमी रहता था। एक दिन वह कहीं जा रहा था तो उसे रास्ते में एक बकरी मिली। वह बहुत बीमार और कमजोर हालत में थी। उस आदमी ने सोचा कि यह ऐसी स्थिति में यहाँ रहेगी तो मर जायेगी। मैं इसे अपने घर ले जाता हूँ। वह आदमी उस बकरी को अपने घर ले गया।

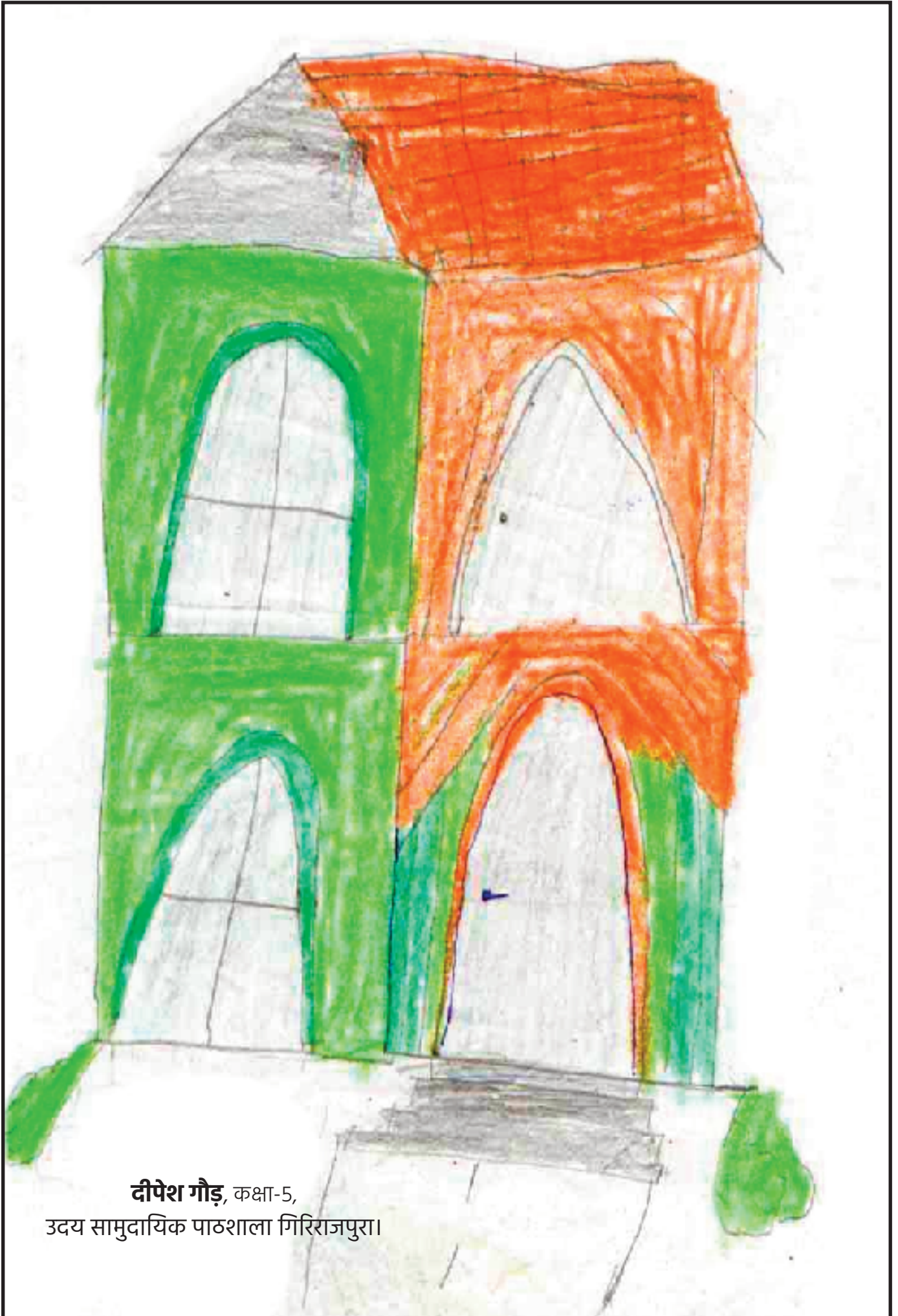
विजय गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा के द्वारा शुरु की गई कहानी को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

विकास गुर्जर, कक्षा-3, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



पहेलियों के ज़वाब -

1. लाठी
2. सड़क
3. बर्फ
4. नौकरानी
5. चंदा मामा



दीपेश गौड़, कक्षा-5,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।